IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

"21 वीं सदी के हिंदी फिल्मों में संघर्षशील और आत्मनिर्भर 'स्त्री' "

डॉ. स्नेहल श्रीकांत गर्जेपाटील
हिंदी अधिव्याख्याता
कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, पलूस
snehalgarjepatil@gmail.com

सारांश : *हिंदी साहित्य और हिंदी सिनेमा भारतीय समाज की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। साहित्य जहाँ मानवीय अनुभवों, सामाजिक संरचनाओं और वैचारिक प्रवृत्तियों को शब्दों में अभिव्यक्त करता है, वहीं सिनेमा उन्हीं अनुभवों को दृश्य-श्रव्य माध्यम के द्वारा व्यापक जनसमूह तक पहुँचाता है। दोनों के बीच का संबंध एकतरफा न होकर संवादात्मक और अंत:क्रियात्मक है। 21 वीं सदी के भारतीय सिनेमा में महिलाओं के संघर्ष के चित्रण ने न केवल सिनेमा की दुनिया में, बल्कि समाज में भी महिलाओं के प्रति जो धारणाएँ थी उन्हें बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले जहां यह संघर्ष समाज के लिए एक चुनौती और विद्रोह का प्रतीक था, वहीं अब यह आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रता और आत्म-खोज का प्रतीक बन गया है। फिल्मों में महिलाओं के द्वारा किए गए प्रतिरोध ने महिलाओं को प्रेरित किया है कि वे अपनी पहचान को खोजें और बिना किसी सामाजिक दबाव के अपने फैसले खुद लें और जीवन में नई ऊंचाइयों तक पहुंचें। हालांकि, असली जिंदगी में यह यात्रा अभी भी उतनी सरल नहीं है, जितनी फिल्मों में दिखाई जाती है। फिर भी, यह कहना गलत नहीं होगा कि भारतीय सिनेमा ने महिलाओं के प्रतिरोध को समाज में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनाया है और इससे जुड़ी चुनौतियों को उजागर किया है। सिनेमा ने महिलाओं के संघर्ष को सामान्य बनाने में मदद की है, जिससे समाज में इसे लेकर बढ़ती स्वीकृति और जागरूकता भी देखी जा रही है। स्त्रियों के लिए 20 वीं सदी में सामाजिक वर्जनाओं के टैबू टूटने का जो सिलसिला शुरू हुआ, 21 वीं सदी तक उसमें और भी इजाफे हुए। वर्जनाओं और पाबंदियों का तिलिस्म टूटने के साथ ही स्त्री चेतना अपनी अस्मिता के लिए और अधिक मुखर होकर अभिव्यक्त होने लगी है।*

कुंजी शब्द : 21 वीं सदी, हिंदी सिनेमा, संघर्ष, आत्मनिर्भर, विद्रोह, परंपरा, संस्कृति, टैबू टूटना, स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, आत्मसम्मान, साहस, शक्ति, चुनौती, अन्याय, सशक्त, महत्त्वकांक्षा, आधुनिक, परिश्रम, सक्षम, नायिका, विरोध, हिंसा, विचारोत्तेजक

प्रस्तावना:

सिनेमा और साहित्य का संबंध उतना ही पुराना है जितना पुराना सिनेमा का इतिहास है। पूरे संसार में फिल्म निर्माता साहित्य से प्रभावित रहे और उन्होंने साहित्यिक कृतियों को सिनेमा के माध्यम से जनमानस तक पहुंचाने का कार्य किया है। दरअसल फिल्मों को क्या चाहिए - एक अच्छी कहानी जो दर्शकों के मन को छू सके, कुछ अच्छा संगीत, कुछ अच्छे गीत और फिल्म का अच्छा छायांकन। हिंदी सिनेमा हिंदी साहित्य के अतिरिक्त अंग्रेजी साहित्य से भी बहुत प्रभावित रहा है। शेक्सपियर से लेकर रस्किन बॉन्ड तक के नाटक और उपन्यासों पर हिंदी फिल्में बनी हैं। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। इस आइने में दिखाई देने वाले समाज को सिनेमा जब अपने पर्दे पर दर्शाता है तो वह निश्चित रूप से साहित्य के संसार को विस्तृत करता है।

'दादा साहब फालके' की फिल्मों में भारतीय परंपरा और कथात्मकता का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। हिंदी सिनेमा के प्रारंभिक चरण में पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं के साथ-साथ साहित्यिक रचनाओं का भी उपयोग हुआ। रामचंद्र शुक्लजी के मतानुसार, "भारतीय कथा-परंपरा ने फिल्म निर्माण को वैचारिक और संरचनात्मक आधार प्रदान किया।" 1 बाद के वर्षों में प्रेमचंद, शरतचंद्र चट्टोपाध्याय और जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों की कृतियाँ सिनेमा के लिए प्रेरणा बनीं। सिनेमा इतिहासकार बी.डी.गर्गा के मतानुसार, "हिंदी सिनेमा ने हिंदी साहित्य से कथावस्तु और चरित्र-गठन की गहराई प्राप्त की।" 2 सिनेमा अक्सर ही समाज की समस्याओं को स्पष्ट रूप से समाज के सामने प्रस्तुत करता आया है। उसने हर वर्ग की आवाज को फिल्म के रूप में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

पर्दे पर उतार कर लोगों के दिलों तक पहुँचाया है। सिनेमा ने महिलाओं के जीवन तथा समस्याओं को भी पुरजोर तरिके से समाज के सामने रखा है।

निःसंदेह सिनेमा एक प्रभावी माध्यम है,यह समाज और संस्कृति को गहराई तक प्रभावित करता है। जब हम 21वीं सदी के हिंदी सिनेमा में 'स्त्री संघर्ष' की बात करते हैं तब यह देखना नितांत आवश्यक हो जाता है कि समाज में स्त्री संघर्ष की आवाज का स्वरूप क्या है? वह कितनी मुखर स्पष्ट या दबी-कुचली हुई है। समीक्षक नामवर सिंह के अनुसार, "साहित्य समाज का दर्पण है और सिनेमा उस दर्पण का दृश्य विस्तार।" 3 प्रदर्शन या प्रचार में सिनेमा साहित्य से भी आगे जाता दिखाई देता है। वह 'लोगों' से 'डायरेक्ट' 'कनेक्ट' होता है। समाज स्त्री के इस संघर्षात्मक छवि को किस प्रकार देखता, समझता और स्वीकार करता है। क्या स्त्री संघर्ष का स्वर सामाजिक बदलाव के संकेत देता है या एक अदृश्य दीवार से टकराकर छिन्न-भिन्न हो जाता है? इन सभी प्रश्नों को 21 वीं सदी के सिनेमा के माध्यम से देखने का प्रयास, इस शोध आलेख के मूल में है।

सिनेमा के प्ररंभिक काल में स्त्री का चित्रण-

भारत में सिनेमा के प्रसार के साथ ही फिल्मों में नायिका को अबला के रूप में ही प्रदर्शित किया जाता रहा है। जहाँ पति या पुत्र के बिना उसका समाज में कोई महत्त्व नहीं है। वह कमजोर है तथा उनका जीवन दु:ख से बोझिल है और वह रोते हुए अपना जीवन व्यतित करती है। गौरी नाथ के मतानुसार, "हिंदी फिल्मों में स्त्री समाज अलग-अलग रूपों में मौजूद है लेकिन कुछ कला फिल्मों के अलावा यह पूरी आधी आबादी सिर्फ हाशिए पर मौजूद रहती है या तो वह शोपीस होती है या फिर फिल्म में मौजूद रहते हुए भी अनावश्यक होती है।" 4 सन 1942 की फिल्म निकाह की नायिका नीलोंफर कहानी के अंत में आंसू भरी आंखों से कहती है कि उसके साथ एक संपत्ति जैसा बर्ताव किया जा रहा है। फिल्म का यह दृश्य दर्शाता है कि महिला को पुरुष समाज अपनी संपत्ति समझता था और समाज की यह धारणा फिल्मों में भी प्रदर्शित होती रही थी। 'प्रेम रोग' (1942) फिल्म की नायिका 'मनोरमा' विधवा हो जाने के बाद समाज से उपेक्षित हो जाती है और जब नायक मनोरमा से विवाह करना चाहता है तो समाज उन दोनों को हेय दृष्टि से देखा है। सन 1980-90 के दशक की प्रसिद्ध अभिनेत्री 'निरुपमा राय' की हिट फिल्मों जैसे 'मर्द' , 'क्रांति' , 'सुहाग' , 'मुक्कदर का सिकंदर' , 'अमर अकबर एंन्थोनी' आदि में उनके अधिकांश पात्र कमजोर मां, लाचार पत्नी के रूप में ही दिखते हैं। उस दौर में बनी महिला प्रधान फिल्मों की संख्या इतनी कम है कि उन्हें उंगलियों पर गिना जा सकता है जैसे- 'मदर इंडिया' , 'सीता और गीता' , 'आंधी' और 'दामिनी' आदि।

21 वीं सदी के सिनेमा में स्त्री का चित्रण

21वीं सदी हिंदी सिनेमा का वह दौर है जहां फिल्मों में नायिकाएं केवल नाचने-गाने या दर्शकों को आकर्षित करने के लिए नहीं होती। वह दौर बीत चुका था जहां पर फिल्मों की सफलता का भार केवल पुरुष के कंधों पर होता था और फिल्में नायकों के नाम पर चलती थी। धीरे-धीरे ही सही सिनेमा जगत स्त्री छवि के नए आयामों को पारखी नजर से देखने लगा और समानांतर सिनेमा का नया दौर आया जहां फिल्मों की सफलता का श्रेय केवल नायकों के हिस्से में न रह कर, नायिकाओं के खाते में भी जुड़ा। 'स्त्री प्रधान' फिल्में भी सिनेमा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनने लगी। स्त्रियों के लिए 20 वीं सदी में सामाजिक वर्जनाओं के टैबू टूटने का जो सिलसिला शुरू हुआ, 21वीं सदी तक उसमें और भी इजाफे हुए। वर्जनाओं और पाबंदियों का तिलिस्म टूटने के साथ ही स्त्री चेतना अपनी अस्मिता के लिए और अधिक मुखर होकर अभिव्यक्त होने लगी। 21 वीं सदी में सिनेमा में उभरते स्त्री के अलग-अलग रूपों को इस प्रकार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जिसमें से पहला है-

1. आत्मनिर्भर और स्वतंत्र स्त्री-

'क्विन' (2014) फिल्म की नायिका 'रानी' का चरित्र आधुनिक भारतीय नारी के आत्मनिर्भर और स्वतंत्र स्वरूप का अत्यंत सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। रानी एक साधारण, पारंपरिक परिवार की भोली-भाली लड़की के रूप में सामने आती है, जिसकी दुनिया उसके मंगेतर और परिवार तक सीमित होती है। लेकिन जब विवाह टूट जाता है, तो वह टूटने के बजाय स्वयं को खोजने की यात्रा पर निकल पड़ती है। अकेले हनीमून पर जाने का उसका निर्णय उसके आत्मविश्वास और साहस का प्रतीक बन जाता है। इस यात्रा के दौरान वह न केवल नए लोगों और संस्कृतियों से परिचित होती है, बल्कि अपने भीतर छिपी क्षमता,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

आत्मसम्मान और स्वतंत्र सोच को भी पहचानती है। रानी धीरे-धीरे दूसरों पर निर्भर रहने वाली लड़की से एक ऐसी महिला में परिवर्तित हो जाती है, जो अपने फैसले स्वयं लेती है और अपने जीवन की जिम्मेदारी उठाती है। वह यह समझ जाती है कि खुशी और पहचान किसी रिश्ते पर निर्भर नहीं होती, बल्कि स्वयं के भीतर से उत्पन्न होती है। अंततः जब उसका पूर्व मंगेतर वापस आता है, तो रानी आत्मसम्मान के साथ उसे अस्वीकार कर देती है, जो उसके पूर्ण आत्मनिर्भर और स्वतंत्र व्यक्तित्व का प्रमाण है। इस प्रकार, रानी का चरित्र यह संदेश देता है कि नारी को अपनी पहचान के लिए किसी सहारे की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह स्वयं अपने जीवन की नायिका बन सकती है।

II. स्त्री का साहस और उसकी शक्ति-

'कहानी' (2012) की कथा स्त्री के साहस, धैर्य और आंतरिक शक्ति का अत्यंत प्रभावशाली परिचय प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका 'विद्या बागची' , जो गर्भवती होने के बावजूद अपने लापता पति की खोज में अकेले कोलकता जैसी भीड़भाड़ वाली और अनजान नगरी में आती है, एक सामान्य स्त्री नहीं बल्कि असाधारण साहस की प्रतीक बनकर उभरती है। वह हर कठिन परिस्थिति, झूठ और खतरे का सामना धैर्य और बुद्धिमत्ता से करती है। समाज जहां उसे एक कमजोर और असहाय महिला समझता है, वहीं वह अपनी सूझबूझ और आत्मविश्वास से हर बाधा को पार करती है। कहानी आगे बढ़ते हुए यह स्पष्ट करती है कि उसकी कोमलता के पीछे एक दृढ़ संकल्प और अदम्य शक्ति छिपी है। अंत में, विद्या अपनी चतुराई और साहस से न केवल अपने पति के साथ हुए अन्याय का बदला लेती है, बल्कि यह भी सिद्ध करती है कि स्त्री किसी भी परिस्थिति में कमजोर नहीं होती, बल्कि वह अपनी शक्ति और साहस से हर चुनौती का सामना कर सकती है।

'मॉम' (2017) हिंदी सिनेमा की एक ऐसी प्रभावशाली फिल्म है, जो स्त्री के साहस, ममता और अदम्य शक्ति को गहराई से प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका 'देवकी' , जिसका किरदार 'श्रीदेवी' ने निभाया है, एक साधारण माँ के रूप में दिखाई देती है, लेकिन जब उसकी बेटी के साथ अमानवीय अन्याय होता है, तो वही माँ एक दृढ़, निडर और संकल्पशील महिला में परिवर्तित हो जाती है। न्याय व्यवस्था की सीमाओं और सामाजिक उदासीनता के बीच देवकी हार नहीं मानती, बल्कि अपने साहस और सूझबूझ से स्वयं न्याय की राह पर चल पड़ती है। उसका यह रूप दर्शाता है कि स्त्री केवल कोमलता की प्रतीक नहीं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर वह असीम शक्ति और प्रतिरोध का रूप भी धारण कर सकती है। फिल्म यह संदेश देती है कि एक माँ की ममता ही उसकी सबसे बड़ी ताकत होती है, जो उसे हर भय और बाधा से लड़ने की प्रेरणा देती है। इस प्रकार, मॉम स्त्री के भीतर निहित साहस, आत्मबल और न्याय के प्रति उसकी अटूट प्रतिबद्धता का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

III. करियर उन्मुख और महत्त्वकांक्षी स्त्री-

'मर्दानी' (2014) एक ऐसी सशक्त फिल्म है, जो कैरियर उन्मुख, महत्वाकांक्षी और दृढ़निश्चयी स्त्री के रूप को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका 'शिवानी शिवाजी रॉय' , जिसका अभिनय 'रानी मुखर्जी' ने किया है, एक समर्पित और निडर पुलिस अधिकारी के रूप में सामने आती है। वह अपने पेशे के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध है और मानव तस्करी जैसे गंभीर अपराध के खिलाफ संघर्ष करते हुए अपने साहस, बुद्धिमत्ता और नेतृत्व क्षमता का परिचय देती है। शिवानी केवल एक कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी ही नहीं, बल्कि एक ऐसी महिला है जो अपने कैरियर को अपनी पहचान और उद्देश्य के रूप में देखती है। उसकी महत्वाकांक्षा व्यक्तिगत सफलता तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज में न्याय और सुरक्षा स्थापित करना उसका लक्ष्य है। फिल्म की कथा यह दर्शाती है कि आधुनिक स्त्री अपने पेशेवर जीवन में पुरुषों के समान ही सक्षम, निर्णायक और प्रभावशाली भूमिका निभा सकती है। शिवानी का चरित्र इस बात को स्पष्ट करता है कि स्त्री की महत्वाकांक्षा केवल निजी उन्नति तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन की वाहक भी बन सकती है। विपरीत परिस्थितियों, अपराधियों के खतरे और तंत्र की जटिलताओं के बावजूद वह पीछे नहीं हटती और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करती है। इस प्रकार, मर्दानी एक ऐसी स्त्री का चित्रण करती है जो आत्मनिर्भर, साहसी और अपने कैरियर के प्रति पूर्णतः समर्पित है।

'गुंजन सक्सेना कारगिल गर्ल' (2020) एक ऐसी प्रेरणादायक फिल्म है, जो कैरियर-उन्मुख और महत्वाकांक्षी स्त्री के संघर्ष, आत्मविश्वास और उपलब्धि का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका 'गुंजन सक्सेना' , जिसका किरदार 'जान्हवी कपूर' ने निभाया है, बचपन से ही पायलट बनने का सपना देखती है। सामाजिक रूढ़ियों और "लड़कियाँ यह नहीं कर सकतीं" 5 जैसी सोच के बावजूद वह अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होती। भारतीय वायुसेना जैसे पुरुष-प्रधान क्षेत्र में प्रवेश करना उसके लिए आसान नहीं होता, जहाँ उसे लगातार भेदभाव, संदेह और कठिन प्रशिक्षण का सामना करना पड़ता है। गुंजन का चरित्र यह दर्शाता है कि एक महत्वाकांक्षी स्त्री केवल सपने देखने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उन्हें साकार करने के लिए कठोर परिश्रम, अनुशासन और धैर्य का परिचय देती है। वह हर चुनौती को अपने आत्मबल से पार करती है और स्वयं को एक सक्षम पायलट के रूप में सिद्ध करती है। कारगिल युद्ध के दौरान उसका साहस और कर्तव्यनिष्ठा चरम पर दिखाई देती है, जब वह युद्ध क्षेत्र में जोखिम भरे मिशनों को अंजाम देती है और घायल सैनिकों को सुरक्षित बाहर निकालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

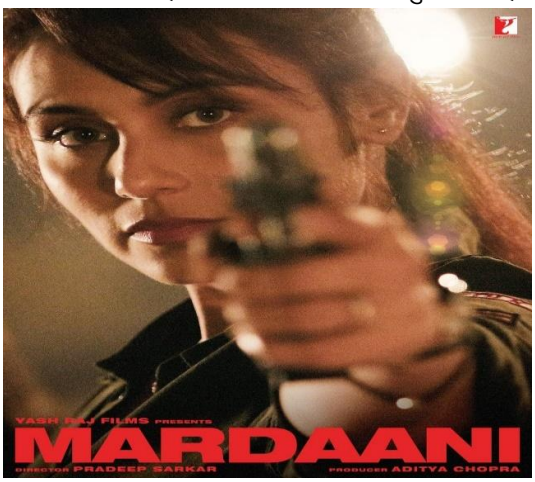

IV. यथार्थवादी और बहुआयामी व्यक्तित्त्व-

'नीरजा' (2016) एक ऐसी यथार्थवादी फिल्म है, जो एक साधारण युवती के भीतर छिपे असाधारण साहस और बहुआयामी व्यक्तित्व को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका 'नीरजा भनोट' , जिसका सशक्त अभिनय 'सोनम कपूर' ने किया है, एक पेशेवर एयर होस्टेस होने के साथ-साथ एक जिम्मेदार बेटी, सहृदय इंसान और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक के रूप में सामने आती है। फिल्म की कथा प्लेन Am Flight 73 hijacking जैसी वास्तविक घटना पर आधारित है, जहाँ नीरजा संकट

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

की घड़ी में अद्भुत धैर्य, बुद्धिमत्ता और साहस का परिचय देती है। वह भय और आतंक के वातावरण में भी अपनी सूझबूझ से यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। उसका यह रूप केवल एक नायिका का नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और दृढ़ व्यक्तित्व का परिचायक है, जो अपने कर्तव्यों को सर्वोपरि मानता है। नीरजा का चरित्र बहुआयामी इसलिए है क्योंकि उसमें भावनात्मक संवेदनशीलता, पेशेवर निष्ठा, पारिवारिक लगाव और संकट में निर्णय लेने की क्षमता—सभी गुण एक साथ दिखाई देते हैं। वह न तो केवल साहस की प्रतीक है और न ही केवल करुणा की, बल्कि इन दोनों का संतुलित और यथार्थवादी समन्वय है। अंततः वह अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हुए असाधारण त्याग का परिचय देती है, जो उसे एक प्रेरणास्रोत बना देता है।

V. सहमती और अधिकारों पर जोर-

'पिंक' (2016) एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सामाजिक रूप से प्रासंगिक फिल्म है, जो स्त्री की सहमति (consent) और उसके अधिकारों के प्रश्न को केंद्र में रखती है। फिल्म की कथा तीन युवतियों के इर्द-गिर्द घूमती है, जो एक घटना के बाद समाज, पुलिस और न्याय व्यवस्था की जटिलताओं का सामना करती हैं। विशेष रूप से नायिका 'मीनल' का चरित्र यह दर्शाता है कि एक स्त्री को अपनी इच्छा और असहमति व्यक्त करने का पूर्ण अधिकार है, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों। फिल्म में 'अमिताभ बच्चन' द्वारा निभाया गया वकील का किरदार न्यायालय में यह स्पष्ट करता है कि, ""ना" का अर्थ हमेशा "ना" ही होता है, और इसे किसी भी रूप में अनदेखा नहीं किया जा सकता।" 6 यह फिल्म समाज में व्याप्त उस मानसिकता पर प्रहार करती है, जो स्त्री के पहनावे, व्यवहार या जीवनशैली के आधार पर उसके चरित्र और अधिकारों का आकलन करती है। पिंक यह स्थापित करती है कि स्त्री की सहमति ही किसी भी संबंध या स्थिति का सबसे महत्वपूर्ण आधार है, और उसके बिना कोई भी कार्य अन्यायपूर्ण और अस्वीकार्य है। इस प्रकार, यह फिल्म न केवल स्त्री के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाती है, बल्कि समाज को यह संदेश भी देती है कि समानता, सम्मान और स्वतंत्रता हर स्त्री का मौलिक अधिकार है।

'गिल्टी' (2020) में कई ऐसे प्रभावशाली कथन और संवाद सामने आते हैं, जो सहमति (consent), सत्य और सामाजिक पूर्वाग्रहों पर गहरी टिप्पणी करते हैं। फिल्म यह स्पष्ट करती है कि किसी भी संबंध में "हाँ" और "ना" के बीच का अंतर समझना अत्यंत आवश्यक है, और किसी भी प्रकार की चुप्पी को सहमति नहीं माना जा सकता। इसके साथ ही, यह भी दर्शाया गया है कि समाज अक्सर बाहरी रूप, भाषा और वर्ग के आधार पर लोगों को जल्दी 'सही' या 'गलत' ठहरा देता है, जबकि सच्चाई कई बार इससे कहीं अधिक जटिल होती है। फिल्म के कथनों में यह संदेश निहित है कि हर व्यक्ति की आवाज़ को गंभीरता से सुना जाना चाहिए और बिना पूर्ण सत्य जाने किसी निष्कर्ष पर पहुँचना न्याय के विरुद्ध है। नायिका 'नैंकी' के माध्यम से यह विचार भी उभरता है कि आत्ममंथन और सच्चाई की खोज ही सही निर्णय तक पहुँचने का मार्ग है। इस प्रकार, गिल्टी के कथन समाज को संवेदनशीलता, न्यायप्रियता और सहमति के महत्व को समझने की प्रेरणा देते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

VI. लैंगिक रूढियों को तोडती स्त्री-

'क्या कहना' (2000) एक ऐसी फिल्म है, जो लैंगिक रूढ़ियों और सामाजिक बंधनों को तोड़ती नई स्त्री के सशक्त चित्रण को प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका 'निशा' पारंपरिक मान्यताओं और परिवार द्वारा थोपे गए कठोर नियमों के बीच अपने अस्तित्व और स्वतंत्रता की तलाश करती है। पितृसत्तात्मक सोच, "लोग क्या कहेंगे" जैसी मानसिकता और स्त्री के व्यवहार पर नियंत्रण रखने वाली सामाजिक संरचनाओं के विरुद्ध उसका संघर्ष उसे एक जागरूक और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व में बदल देता है। वह यह प्रश्न उठाती है कि क्यों स्त्री की इच्छाओं, सपनों और जीवन के निर्णयों को समाज की मान्यताओं के अधीन रखा जाए। फिल्म यह दर्शाती है कि नई स्त्री केवल विद्रोह नहीं करती, बल्कि अपनी पहचान, स्वतंत्रता और सम्मान के लिए संघर्ष करते हुए एक नई सामाजिक चेतना का निर्माण करती है। इस प्रकार, यह फिल्म लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती देते हुए यह संदेश देती है कि स्त्री को अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का पूर्ण अधिकार है और वही उसकी वास्तविक स्वतंत्रता का आधार है।

'अस्तित्व' (2000) की नायिका 'अदिति' का चरित्र लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ती हुई स्त्री के सशक्त और यथार्थवादी रूप को प्रस्तुत करता है। अदिति एक ऐसी महिला है, जो पारंपरिक वैवाहिक जीवन में अपने अस्तित्व और भावनात्मक जरूरतों की अनदेखी से जूझती है, लेकिन अंततः वह अपने आत्मसम्मान और पहचान को सर्वोपरि मानती है। समाज द्वारा निर्धारित "आदर्श पत्नी" की छवि के विपरीत, वह अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का साहस दिखाती है और अपने अतीत को स्वीकार करते हुए किसी अपराधबोध में जीने से इंकार करती है। उसका यह दृष्टिकोण पितृसत्तात्मक सोच को चुनौती देता है, जो स्त्री की इच्छाओं और स्वतंत्रता को सीमित करने का प्रयास करती है। अदिति का चरित्र यह स्पष्ट करता है कि स्त्री केवल संबंधों में बंधी हुई भूमिका नहीं है, बल्कि वह एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है, जिसे अपनी भावनाओं, इच्छाओं और निर्णयों पर पूर्ण अधिकार है।शमीम खान के मतानुसार, "'सत्ता,' 'फैशन' , 'एतराज़ ', 'लीला' ,'अस्तित्व' , 'जुबैदा' , जब वी मेट' , 'लज्जा' , 'एक छोटी सी लव स्टोरी' , 'कभी अलविदा ना कहना' और 'क्या कहना' की नायिकाएं यौन वर्जनाओं, और समाज की परंपरागत पितृसत्तात्मक सोच के विरुद्ध और प्रतिरोध में खड़ी होती दिखाई देती हैं।" 7 इसी प्रकार, अस्तित्व की नायिका लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए आत्मसम्मान, स्वायत्तता और व्यक्तिगत पहचान की नई परिभाषा प्रस्तुत करती है।

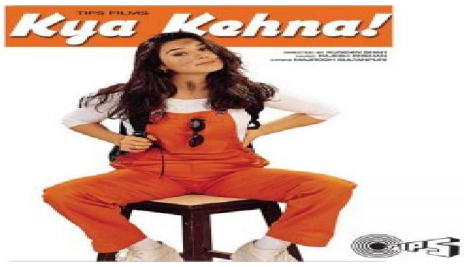

VII. खेल के क्षेत्र में सशक्त स्त्री-

'दंगल' (2016) फिल्म खेलकूद के क्षेत्र में सशक्त स्त्री के उभार का अत्यंत प्रेरणादायक चित्रण प्रस्तुत करती है। इस फिल्म में 'गीता और बबीता फोगाट' जैसी बेटियाँ, अपने पिता के मार्गदर्शन में पारंपरिक लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए कुश्ती जैसे पुरुष-प्रधान खेल में अपनी पहचान बनाती हैं। 'अमीर खान' द्वारा निभाए गए महावीर सिंह फोगाट के किरदार के माध्यम से यह

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

दिखाया गया है कि यदि सही दिशा और प्रोत्साहन मिले, तो बेटियाँ भी किसी से कम नहीं होतीं। गीता का चरित्र विशेष रूप से यह दर्शाता है कि एक लड़की कठिन परिश्रम, अनुशासन और आत्मविश्वास के बल पर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच सकती है। समाज के तानों, विरोध और सीमित सोच के बावजूद वह अपने लक्ष्य पर अडिग रहती है और अंततः देश के लिए पदक जीतकर न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे समाज की सोच को बदल देती है। इस प्रकार, दंगल यह संदेश देती है कि खेलकूद के क्षेत्र में स्त्री की भागीदारी और सफलता, उसकी शक्ति, दृढ़ता और आत्मनिर्भरता का सशक्त प्रमाण है। इसके साथ ही 2014 में रिलिज मैरी कॉम खेल से जुडी मैरी कॉम की आत्मकथा परक फिल्म है।

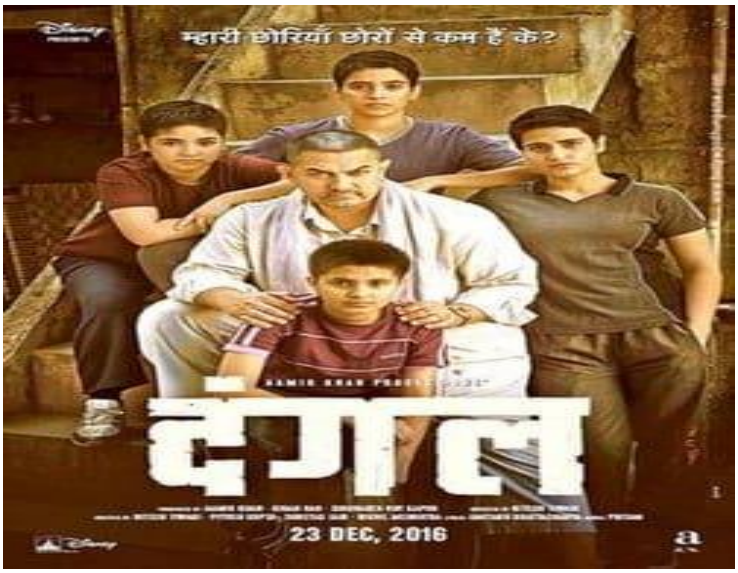

VIII. घरेलू हिंसा और स्त्री आत्मसम्मान-

'थप्पड' (2020) एक अत्यंत संवेदनशील और प्रभावशाली फिल्म है, जो घरेलू हिंसा और महिला के आत्मसम्मान के प्रश्न को गहराई से उठाती है। फिल्म की नायिका 'अमृता' , जिसका सशक्त अभिनय 'तापसी पन्नू' ने किया है, एक साधारण गृहिणी के रूप में अपने परिवार और पति के लिए समर्पित जीवन जीती है। लेकिन एक सार्वजनिक अवसर पर पति द्वारा मारा गया एक थप्पड़ उसके जीवन की दिशा बदल देता है। यह घटना केवल शारीरिक चोट नहीं, बल्कि उसके आत्मसम्मान और अस्तित्व पर आघात के रूप में सामने आती है। "अमृता का निर्णय यह स्पष्ट करता है कि किसी भी प्रकार की हिंसा, चाहे वह "सिर्फ एक थप्पड़" ही क्यों न हो, स्वीकार्य नहीं है।" 8 फिल्म यह संदेश देती है कि स्त्री का आत्मसम्मान सबसे महत्वपूर्ण है और उसे किसी भी परिस्थिति में समझौते के नाम पर त्यागा नहीं जाना चाहिए। इस प्रकार, थप्पड़ समाज में व्याप्त उस सोच को चुनौती देती है, जो घरेलू हिंसा को सामान्य मानकर नजरअंदाज कर देती है, और यह स्थापित करती है कि सम्मान और समानता हर स्त्री का मौलिक अधिकार है।

'हाईवे' (2014) एक ऐसी संवेदनशील फिल्म है, जो घरेलू हिंसा, दमन और स्त्री के आत्मसम्मान के प्रश्न को गहराई से उजागर करती है। फिल्म की नायिका 'वीरा' , जिसका किरदार 'आलिया भट्ट' ने निभाया है, बाहरी रूप से एक सम्पन्न परिवार की लड़की दिखाई देती है, लेकिन उसके भीतर बचपन के शोषण और मानसिक आघात की पीड़ा छिपी होती है। अपहरण की घटना के बाद उसकी यात्रा केवल भौतिक नहीं, बल्कि आत्मिक मुक्ति की यात्रा बन जाती है, जहाँ वह पहली बार अपनी दबी हुई सच्चाइयों को व्यक्त करती है। वीरा का चरित्र यह दर्शाता है की वह घर जैसी सुरक्षित मानी जाने वाली जगह भी कई बार हिंसा और अन्याय का केंद्र बन सकती है। "वीरा! जब भी घर के बाहर जाना केयरफुल रहना.. तो फिर यह क्यों नहीं कहा कि तुझे घर के अंदर

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

भी केयरफुल रहना है…" 9 वह अंततः अपने आत्मसम्मान और सच्चाई को स्वीकार करते हुए उस जीवन को अस्वीकार कर देती है, जो केवल सामाजिक दिखावे पर आधारित था। इस प्रकार, हाईवे यह संदेश देती है कि स्त्री के लिए सबसे महत्वपूर्ण उसका आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और अपनी आवाज़ को पहचानना है, और किसी भी प्रकार की हिंसा या दमन के खिलाफ खड़े होना ही उसकी वास्तविक शक्ति है।

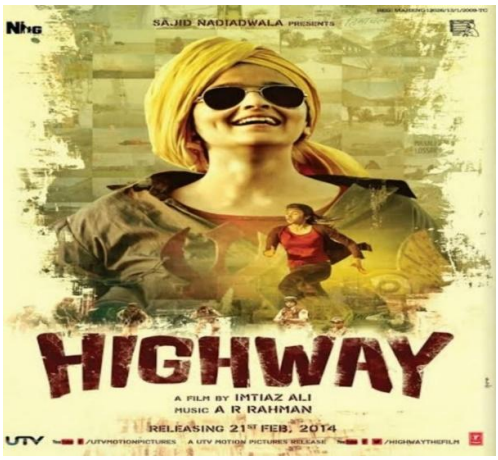

9. देशभक्ति और साहस-

'राज़ी' (2018) एक सशक्त देशभक्ति प्रधान फिल्म है, जो साहस, कर्तव्य और त्याग की भावना को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका 'सहमत' , जिसका प्रभावशाली अभिनय 'आलिया भट्ट' ने किया है, एक साधारण कश्मीरी युवती होते हुए भी अपने देश के लिए जासूस बनने का कठिन निर्णय लेती है। वह व्यक्तिगत भावनाओं, पारिवारिक संबंधों और अपने जीवन के सुख को त्यागकर राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखती है। दुश्मन देश में रहकर हर पल खतरे के बीच जानकारी जुटाना उसके अदम्य साहस, मानसिक दृढ़ता और बुद्धिमत्ता को दर्शाता है। सहमत का चरित्र यह स्पष्ट करता है कि सच्ची देशभक्ति केवल युद्धभूमि में ही नहीं, बल्कि गुप्त और कठिन परिस्थितियों में भी अपने कर्तव्य का निर्वाह करने में निहित होती है। इस प्रकार, राजी एक ऐसी स्त्री का चित्रण करती है, जो साहस, त्याग और राष्ट्रप्रेम के माध्यम से यह सिद्ध करती है कि महिलाएँ भी देश सेवा में किसी से कम नहीं हैं।

'धाकड' (2022) एक एक्शन प्रधान फिल्म है, जो देशभक्ति, साहस और स्त्री की अदम्य शक्ति को उभारते हुए एक सशक्त नायिका का चित्रण करती है। फिल्म की नायिका 'अग्नि' , जिसका किरदार 'कंगना राणावत' ने निभाया है, एक प्रशिक्षित गुप्त एजेंट के रूप में राष्ट्र की सुरक्षा के लिए खतरनाक मिशनों को अंजाम देती है। वह मानव तस्करी और अंतरराष्ट्रीय अपराधों के विरुद्ध लड़ते हुए अपने असाधारण साहस, युद्धक कौशल और मानसिक दृढ़ता का परिचय देती है। अग्नि का चरित्र यह दर्शाता है कि देशभक्ति केवल भावना नहीं, बल्कि कर्म और बलिदान से सिद्ध होती है। वह अपने निजी जीवन के आघातों को शक्ति में बदलकर देशहित के लिए समर्पित रहती है। इस प्रकार, धाकड़ एक ऐसी स्त्री का चित्रण करती है, जो निर्भीक, आत्मनिर्भर और राष्ट्र के प्रति पूर्णतः समर्पित है, और यह सिद्ध करती है कि महिलाएँ भी साहस और देशभक्ति के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा सकती हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

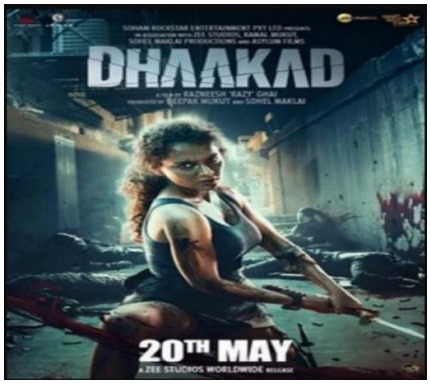

X. अपने मूल्य को स्थापित करती स्त्री-

'इंग्लिश-विंग्लिश' (2012) एक अत्यंत संवेदनशील और प्रेरणादायक फिल्म है, जो अपने मूल्य को स्थापित करती स्त्री के आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की यात्रा को खूबसूरती से प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका 'शशि' , जिसका सशक्त अभिनय 'श्रीदेवी' ने किया है, एक साधारण गृहिणी है जिसे अंग्रेज़ी न आने के कारण परिवार और समाज में उपेक्षा का सामना करना पड़ता है। लेकिन वह इस कमी को अपनी कमजोरी बनने देने के बजाय इसे अपनी ताकत में बदलने का निर्णय लेती है। न्यूयॉर्क में रहकर अंग्रेज़ी सीखने की उसकी कोशिश केवल भाषा सीखने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह उसके आत्मसम्मान, पहचान और आत्मनिर्भरता की खोज बन जाती है। धीरे-धीरे वह अपने भीतर छिपे आत्मविश्वास को पहचानती है और यह सिद्ध करती है कि किसी व्यक्ति का मूल्य केवल उसकी भाषा या बाहरी योग्यता से नहीं, बल्कि उसके आत्मसम्मान और कर्म से निर्धारित होता है। इस प्रकार, इंग्लिश विंग्लिश यह संदेश देती है कि स्त्री को अपने मूल्य को पहचानने और स्थापित करने के लिए किसी बाहरी मान्यता की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह स्वयं अपनी पहचान गढ़ सकती है।

'लापता लेडीज' (2024) एक सार्थक और विचारोत्तेजक फिल्म है, जो अपने मूल्य को स्थापित करती स्त्री के आत्मसम्मान, पहचान और स्वायत्तता की यात्रा को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती है। फिल्म की कथा दो नवविवाहित महिलाओं के इर्द-गिर्द घूमती है, जो सामाजिक परंपराओं, पहचान की उलझनों और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के बीच अपनी असली पहचान की खोज करती हैं। घूंघट, नाम और रिश्तों के बोझ तले दबे उनके व्यक्तित्व धीरे-धीरे उभरते हैं, और वे यह समझने लगती हैं कि उनका अस्तित्व केवल किसी की पत्नी या बहू तक सीमित नहीं है। विपरीत परिस्थितियों और अनिश्चितताओं के बीच वे आत्मनिर्भर बनने, अपने निर्णय स्वयं लेने और अपने जीवन की दिशा तय करने का साहस जुटाती हैं। इस प्रकार, लापता लेडीज यह संदेश देती है कि स्त्री का वास्तविक मूल्य उसकी स्वतंत्र सोच, आत्मसम्मान और अपनी पहचान को स्थापित करने की क्षमता में निहित होता है, और जब वह स्वयं को पहचान लेती है, तभी वह सच में "लापता" से "सशक्त" बनती है।

'मिसेस' (2024) एक संवेदनशील और विचारोत्तेजक फिल्म है, जो अपने मूल्य को स्थापित करती स्त्री के आत्मसम्मान, पहचान और स्वतंत्रता के संघर्ष को गहराई से प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका एक साधारण गृहिणी के रूप में अपने वैवाहिक जीवन में पूरी तरह समर्पित दिखाई देती है, लेकिन धीरे-धीरे उसे यह एहसास होता है कि उसकी पहचान केवल "पत्नी" या "गृहिणी" तक सीमित कर दी गई है। दैनिक जीवन के छोटे-छोटे अनुभवों, उपेक्षा और असमान व्यवहार के बीच वह अपने अस्तित्व और आत्मसम्मान के प्रश्न से जूझने लगती है। यही संघर्ष उसे आत्मचिंतन की ओर ले जाता है, जहाँ वह अपने भीतर की इच्छाओं, सपनों और क्षमताओं को पहचानती है। अंततः वह अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का साहस जुटाती है और यह स्थापित करती है कि स्त्री का मूल्य किसी रिश्ते या भूमिका से नहीं, बल्कि उसके व्यक्तित्व और आत्मसम्मान से निर्धारित होता है। इस प्रकार, मिसेज. फिल्म यह सशक्त संदेश देती है कि जब स्त्री अपने मूल्य को पहचान लेती है, तब वह समाज की सीमाओं से ऊपर उठकर अपनी स्वतंत्र पहचान बना सकती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

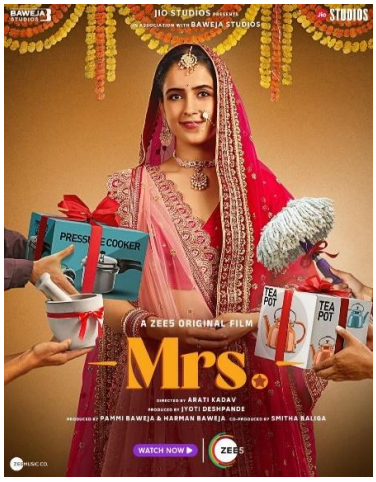

XI. ऐतिहासिक फिल्मों में स्त्री संघर्ष-

प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करती है। फिल्म की नायिका 'रानी लक्ष्मीबाई' , जिनका सशक्त अभिनय 'कंगना राणावत' ने किया है, एक ऐसी वीरांगना के रूप में उभरती हैं जो न केवल अपने राज्य की रक्षा के लिए बल्कि अपने स्वाभिमान और स्वतंत्रता के लिए भी संघर्ष करती हैं। सन 1857 का भारतीय विद्रोह की पृष्ठभूमि में रची गई यह कथा दर्शाती है कि किस प्रकार एक स्त्री सामाजिक और राजनीतिक बंधनों को तोड़कर युद्धभूमि में उतरती है और पुरुषों के समान ही पराक्रम दिखाती है। लक्ष्मीबाई का चरित्र यह सिद्ध करता है कि स्त्री केवल करुणा और ममता की प्रतीक नहीं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर वह अदम्य साहस और नेतृत्व क्षमता का भी परिचय दे सकती है। इस प्रकार, मणिकर्णिका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री संघर्ष और राष्ट्रप्रेम की एक प्रेरणादायक मिसाल प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष-

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि साहित्य जहाँ मानवीय अनुभवों, सामाजिक संरचनाओं और वैचारिक प्रवृत्तियों को शब्दों में अभिव्यक्त करता है, वहीं सिनेमा उन्हीं अनुभवों को दृश्य-श्रव्य माध्यम के द्वारा व्यापक जनसमूह तक पहुँचाता है। 21वीं सदी हिंदी सिनेमा का वह दौर है जहां फिल्मों में नायिकाएं केवल नाचने-गाने या दर्शकों को आकर्षित करने के लिए नहीं होती। वह दौर बीत चुका था जहां पर फिल्मों की सफलता का भार केवल पुरुष के कंधों पर होता था और फिल्में नायकों के नाम पर चलती थी। धीरे-धीरे ही सही सिनेमा जगत स्त्री छवि के नए आयामों को पारखी नजर से देखने लगा और समानांतर सिनेमा का नया दौर आया जहां फिल्मों की सफलता का श्रेय केवल नायकों के हिस्से में न रह कर, नायिकाओं के खाते में भी जुड़ा। 'स्त्री प्रधान' फिल्में भी सिनेमा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनने लगी। 21 वीं सदी में सिनेमा में उभरते स्त्री के अलग-अलग रूपों में आत्मनिर्भर और स्वतंत्र स्त्री, स्त्री साहस और शक्ति, करियर उन्मुख और महत्त्वकांक्षी, यथार्थवादी और बहुआयामी, लैंगिक रूढियों को तोडती, सहमती और अधिकारों पर जोर, खेल में सशक्त, घरेलू हिंसा और महिला आत्मसम्मान, देशभक्ति औऱ साहस, अपने मूल्य को स्थपित करती और ऐतिहासिक फिल्मों में स्त्री संघर्ष के माध्यम से 21 वीं सदी की हिंदी फिल्मों के स्त्री संघर्ष और प्रतिरोध को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. शुक्ल, रामचंद्र – हिंदी साहित्य का इतिहास, (प्रकाशन- नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2010) पृ.सं- 395
2. बी.डी.गर्गा, So Many Cinemas: The Motion Picture in India, (प्रकाशन- रूपा एण्ड कंपनी, नई दिल्ली, 2004) पृ.सं.-85
3. नामवर सिंह, हिंदी साहित्य का इतिहास, (प्रकाशन- राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010) पृ.सं.-132
4. संपा. गौरी नाथ, हिंदी सिनेमा में हाशिए का समाज (प्रकाशन- अंतिका प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2019) पृष्ठ 240
5. https://youtube.com/shorts/s6ypO1f13VI?si=nRwX8C7MsxU1ZnZI
6. https://youtu.be/jyR1sLLWNHU?si=iJ77ymeq_2QVzOVP
7. शमीम खान, सिनेमा में नारी (प्रकाशन-ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली, 2014) पृष्ठ 30
8. https://youtu.be/t9b0XrI0ieQ?si=7TD5nJd-eu92Hb7V
9. https://youtu.be/JBQ7NMm2faA?si=bLxeYna4DeE0JwDh